SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बेमेतरा जिला में दलहन उत्पादन की स्थिति, समस्याएं एवं संभावनाएं

टेकेश्वरी साहू, शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग,
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
लखन चौधरी, अर्थशास्त्र विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाईनगर, जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors :
टेकेश्वरी साहू, शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग,
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
लखन चौधरी, शोध निदेशक, अर्थशास्त्र विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाईनगर,
जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2020
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2020
Plagiarism : 02% on 20/07/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Monday, July 20, 2020
Statistics: 55 words Plagiarized / 2696 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

csesrjk ftyk esa nygu mRiknu dh fLFkfr] leL;k,a ,oa laHkkouk,a · Lkkjka"k % csesrjk ftyk] NRrhlx<+ dk ,d izeq[k d`f"k iz/kku ftyk gS] tgka izeq[k :Ik ls /kku ds lkFk puk] mM+n] ewax] rqvj] eVj] elwj] yk[kM+h&frojk vkfn nyguh Qlyksa dh [ksrh cgqrk;r ek=k esa gksrh

शोध सारांश :

बेमेतरा जिला, छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख कृषि प्रधान जिला है, जहां प्रमुख रूप से धान के साथ चना, उड़द, मूंग, तुअर, मटर, मसूर, लाखड़ी–तिवरा आदि दलहनी फसलों की खेती बहुतायत मात्रा में होती है। जिला के 90 प्रतिशत से अधिक लोगों के लिए रोजगार एवं आजीविका का मुख्य साधन और जरिया खेती–किसानी, कृषि एवं कृषि सहायक कार्य व्यवसाय है। राज्य के अन्य जिलों की तरह कृषि यहां के लोगों के जीवन निर्वाह का प्रमुख आधार है। वैसे तो बेमेतरा जिला में भी राज्य के अन्य जिलों की तरह खरीफ की प्रमुख फसल धान है, लेकिन यहां प्रमुखता से दलहनी फसलों का अधिक उत्पादन होता है। चना, जिला की मुख्य दलहनी फसल है। बेमेतरा जिला में कुल 1,17,713 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर दलहनी फसलों की खेती की जाती है, इसमें सबसे अधिक 96,223 (80%) हेक्टेयर क्षेत्रफल पर अकेले चना की खेती की जाती है। कुल चना उत्पादन क्षेत्रफल 96,223 हेक्टेयर में सर्वाधिक 29,326 (30%) हेक्टेयर क्षेत्रफल बेमेतरा विकासखण्ड का है। 2018–19 में जिला में कुल 5,65,733 मी. टन दलहनी फसलों का उत्पादन हुआ जिसमें सबसे अधिक चने का 5,07,704 मी. टन उत्पादन है। जिला के कुल चना उत्पादन 5,07,704 मी. टन में सबसे अधिक 1,15,054 (23%) मी. टन बेमेतरा विकासखण्ड में रिकार्ड किया गया। जिला में 2018–19 में प्रमुख दलहनी फसलों का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 803 क्विंटल दर्ज किया गया। बेमेतरा जिला में कृषि कार्य में इस समय सबसे बड़ी समस्या जलवायु एवं मौसम की प्रतिकूलता का है। बेमौसम की वर्षा के कारण फसलें पूरी तरह खराब हो रही हैं, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। जिला की भौगोलिक स्थिति एवं धरातल की बनावट भी दलहनी एवं तिलहनी

फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल परिस्थितियां निर्मित करता है। यही कारण है कि यह जिला राज्य में दलहन उत्पादन में अग्रणी जिला के रूप में अपना स्थान कायम रखने में सफल हो रहा है। जिला में दलहन उत्पादन की अपार संभावनाएं मौजूद हैं, जिनका विदोहन करके जिला में दलहन उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है।

मुख्य शब्द :

कृषि, दलहन उत्पादन, तिलहन, विदोहन।

प्रस्तावना :

भारत आदिकाल से कृषि प्रधान देश रहा है। आज भी देश के लगभग 59 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्य में संलग्न हैं। छत्तीसगढ़ राज्य भी एक कृषि प्रधान राज्य है, और छत्तीसगढ़ मूलतः एक धान उत्पादन प्रधान राज्य होने के बावजूद राज्य में दलहनी फसलों के उत्पादन का विशेष योगदान है। वर्ष 2014–15 में छत्तीसगढ़ राज्य को दलहन श्रेणी में केन्द्र सरकार द्वारा कृषि कर्मण पुरस्कार के लिए चयनित किया गया था। छत्तीसगढ़ राज्य में उगाये जाने वाले कुल दलहनी फसलों में अकेले चना का उत्पादन 42.45 प्रतिशत होता है। छत्तीसगढ़ राज्य का नवोदित जिला बेमेतरा कृषि क्षेत्र में प्रारंभ से ही अग्रणी रहा है। बेमेतरा जिला में दलहनी फसलों की सबसे अधिक खेती की जाती है। रकबा, क्षेत्र, उत्पादन तथा उत्पादकता सभी स्तर पर दलहन उत्पादन में यह जिला अग्रणी है। बेमेतरा जिला में मुख्य दलहनी फसलों में चना, तुअर, उड़द, लाखड़ी, तिवरा, मटर, मसूर इत्यादि की खेती की जाती है। बेमेतरा जिला में 5,822 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। यहां 1,20,388 हेक्टेयर द्विफसली क्षेत्रफल है, जहां प्रमुख रूप से दलहनी फसलों की खेती की जाती है। बेमेतरा जिला में 2018 में दलहनी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल 1,17,716 हेक्टेयर था।

बेमेतरा जिला 21^{0}90 उत्तरी अक्षांश से 81^{0}31 पूर्वी देशांश तक फैला हुआ है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 2,851.81 हेक्टेयर है। बेमेतरा जिला की कुल जनसंख्या सन् 2011 के अनुसार 7,95,759 है, जिसमें 3,97,650 पुरूष तथा 3,98,109 स्त्री जनसंख्या है। जिले में 75,166 पुरूष कृषक तथा 51,797 स्त्री महिला कृषक है। जिले में सिंचाई के प्रमुख साधन नहरें, नलकूप, कुंए एवं तालाब हैं। इसके अलावा यहां शिवनाथ, सुरही, हाफ और संकरी नदियों से भी सिंचाई कर खेती की जाती है। बेमेतरा जिले में 2017–18 में औसत वर्शा 3,874.9 मिमी. दर्ज है।

महत्व :

भारतीय कृषि पद्धति में दालों की खेती का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा दाल उत्पादक देश होने के साथ–साथ सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है। छत्तीसगढ़ राज्य का बेमेतरा जिला दलहन उत्पादन के लिए प्रसिद्ध इसलिए है क्योंकि यहां भूमि का कटाव कम होता है। खेतों में खरीफ फसल के बाद कुछ महिनों तक नमी बनी रहती है, जिसके कारण दलहनी फसलों के लिए अच्छा मौसम मिल जाता है। दलहनी फसलों की गांठों में नाइट्रोजन होने का प्राकृतिक गुण होने के कारण वायुमण्डल में नाइट्रोजन को अपनी जड़ों में स्थिर करके मिट्टी उर्वरता को भी बढ़ाती है। इनकी जड़ों में मूसला पाये जाने के कारण सूखे क्षेत्रों में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जाती है। इन फसलों के दानों के छिलकों में प्रोटीन के अलावा फास्फोरस एवं अन्य खनिज लवण काफी मात्रा में पाये जाते हैं, जिससे पशुओं और मुर्गियों को बढ़ाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। दलहनी फसलों को हरी खाद के रूप में भी प्रयोग की जाती है, जिससे भूमि में नाइट्रोजन की मात्रा में बढ़ोतरी होती है। इन फसलों की खेती सीमित और कम उपजाऊ भूमियों में भी की जा सकती है। कम अवधि में फसलों के उत्पादन होने के कारण बहुफसली प्रणाली में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

उद्देश्य :

बेमेतरा जिला में दलहन उत्पादन की स्थिति, समस्याएं एवं संभावनाएं' नामक इस शोध पत्र के लिए निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं :

1. बेमेतरा जिला के दलहनी फसलों के क्षेत्रफल एवं स्थिति का मूल्यांकन करना।
2. बेमेतरा जिला के दलहनी उत्पादक कृषकों की प्रमुख समस्याओं का पता लगाना एवं उनका अध्ययन करना।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन :

संदर्भित विषय से संबंधित शोध साहित्य के अध्ययन का निष्कर्ष निम्नानुसार पाया गया है :

1. डॉ. अजय कुमार सिंह (2014) : अपने शोध अध्ययन 'खेती में विविधीकरण से मिली सफलता' के अंतर्गत लेखक ने बताया है कि कृषि में दलहनी फसलों के लिए गोबर खाद एवं वर्मी खाद का प्रयोग करने से उत्पादन में काफी मात्रा में वृद्धि होती है। वास्तव में देखा जाय तो गोबर और वर्मी खाद कृषि के लिए बहुत ही उपयोगी है। इससे कृषि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः दलहनी फसलों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए गोबर एवं वर्मी खाद का उपयोग करना आवश्यक है।
2. जगपाल सिंह मलिक (2015) : अपने आलेख 'बढ़ता कृषि उत्पादन एक परिदृष्य' में दक्षिण भारत में छोलिया (चने) के महत्व को बताया है। यहां फसल बहुत ऊंचे दामों पर बिकती है। यह फसल बहुत कम समय पर ही तैयार हो जाने वाली प्रजाति है, परन्तु इसे दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक पहुंचाने में बहुत खर्च आ जाता है और बहुत कम मात्रा में ही पहुंच पाता है। फसल के अच्छी प्रजातियों के बदलाव के लिए फसल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने छोलिया की दो प्रजातियां बताई है। पहला आईसीसी वी 26029 तथा आईसीसीवी 26030। इसके बाद दक्षिण भारत में छोलिया की खेती में काफी बदलाव आया और फसलों के गुणों में भी परिवर्तन हुआ है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि अगर हम दलहनी फसलें चना, तुअर, उड़द, लाख, तिवरा आदि की नई प्रजातियों का उपयोग करते हैं तो अवश्य ही अपनी उत्पादन मात्रा और आमदनी बढ़ा सकते हैं।
3. डॉ. वाई रस शिवे (2016) : अपने लेख 'फसल विविधीकरण और पादप संरक्षण से बढ़ाए दलहन उत्पादन' में मृदा की उत्पादन क्षमता को टिकाऊ बनाए रखने एवं बढ़ाने में दलहनी फसलों के महत्व का विशेष उल्लेख किया है। अनाज वाली फसलों के लगातार उत्पादन जैसे धान–गेहूं, धान–धान, गेहूं–गेहूं इस प्रकार की फसल लेने से भूमि के पोषक तत्वों का दोहन होता है, तथा उत्पादन में भी कमी होने लगता है। इस प्रकार किसानों के सामने यह बहुत बड़ी समस्या आ जाती है। अतः इस समस्या के समाधान के लिए तथा फसल प्रणाली को टिकाऊ बनाने के लिए दलहनी फसल चक्रों को अपना अत्यंत जरूरी है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि मृदा उर्वरता को बनाये रखने तथा गहरी जड़ें, पत्तियों को झड़ने से रोकने तथा मृदा स्वास्थ्य को सुधारने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने एवं टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने के लिए दलहनी फसल एक बेहतर तरीका है, जिससे लोगों के समस्या के निवारण के साथ आय भी बढ़ेगी और लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार भी होगी।

जिला में प्रमुख दलहनी फसलों के उत्पादन की स्थिति की समीक्षा :

बेमेतरा जिला के पांच विकासखण्डों में चना, तुअर, उड़द, लाखड़ी–तिवरा एवं अन्य दलहनी फसलों के उत्पादन की स्थितियों को तालिका क्रंमाक–01 में दिखाया गया है।

तालिका क्र. – 01 : बेमेतरा जिला में प्रमुख दलहनी फसल उत्पादन का क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) संदर्भ वर्ष 2018–19

क्र.	जिला / तहसील –विकासखण्ड (%)[1] (%)[2]	प्रमुख दलहनी फसलें					
		चना (%)[1] (%)[2]	तुअर (%)[1] (%)[2]	उड़द (%)[1] (%)[2]	लाखड़ी / तिवरा (%)[1] (%)[2]	अन्य (%)[1] (%)[2]	योग (%)[1] (%)[2]
1.	नवागढ़	9,437 (10) (61.1)	730 (17) (4.8)	42 (17) (0.3)	4,493 (36) (29.2)	705 (16) (4.6)	15,407 (13)[1] (100)[2]
2.	बेमेतरा	29,326 (30) (82.2)	1,524 (37) (4.3)	69 (28) (0.2)	3,099 (24) (8.7)	1,629 (36) (4.6)	35,647 (30)[1] (100)[2]
3.	साजा	24,429 (26) (91.6)	1,042 (25) (3.9)	114 (47) (0.4)	708 (06) (2.7)	363 (08) (1.4)	26,656 (23)[1] (100)[2]
4.	थान खम्हरिया	17,498 (18) (92.7)	424 (10) (2.2)	12 (05) (0.1)	210 (02) (1.1)	731 (16) (3.9)	18,875 (16)[1] (100)[2]
5.	बेरला	15,533 (16) (73.4)	455 (11) (2.2)	08 (03) (0.1)	4,028 (32) (19.1)	1,104 (24) (5.2)	21,128 (18)[1] (100)[2]
	बेमेतरा जिला : (%)[1] योग / (%)[2] औसत	96,223 (100)[1] (80.2)[2]	4,175 (100)[1] (3.5)[2]	245 (100)[1] (0.2)[2]	12,538 (100)[1] (12.2)[2]	4,532 (100)[1] (3.9)[2]	1,17,713 (100)[1] (100)[2]

नोट : (%)[1] : जिला के कुल क्षेत्रफल (रकबा) में योगदान का प्रतिशत, (%)[2] : विकासखण्ड–तहसील के कुल क्षेत्रफल (रकबा) में योगदान का प्रतिशत / स्रोत : अधीक्षक, भू–अभिलेख बेमेतरा जिला।

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि बेमेतरा जिला में लगभग 1,17,713 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर दलहनी फसलों की खेती की जाती है, इसमें सबसे अधिक 96,223 (80%) हेक्टेयर क्षेत्रफल पर अकेले चना की खेती की जाती है। कुल दलहनी फसलों के 1,17,713 हेक्टेयर क्षेत्रफल का 35,647 (30%) हेक्टेयर क्षेत्रफल रकबा अकेले बेमेतरा विकासखण्ड का आता है। इस प्रकार बेमेतरा जिला में बेमेतरा विकासखण्ड सबसे बड़ा दलहनी फसल उत्पादक रकबा वाला विकासखण्ड है। कुल चना उत्पादन क्षेत्रफल 96,223 हेक्टेयर में सर्वाधिक 29,326 (30%) हेक्टेयर क्षेत्रफल बेमेतरा विकासखण्ड का है। अन्य विकासखण्डों का चना उत्पादन क्षेत्रफल क्रमशः साजा 26 प्रतिशत, थान–खम्हरिया 18 प्रतिशत, बेरला 16 प्रतिशत एवं नवागढ़ 10 प्रतिशत है।

जिला में दूसरी प्रमुख दलहनी फसल के रूप में 12,538 (12%) हेक्टेयर क्षेत्रफल पर लाखड़ी–तिवरा उगाई जाती है। विकासखण्ड वार विश्लेषण के अनुसार सबसे अधिक चना का 30 प्रतिशत (29,326 हे.), तुअर का 37 प्रतिशत (1,524 हे.), एवं अन्य का 36 प्रतिशत (1,629 हे.) उत्पादन क्षेत्रफल बेमेतरा विकासखण्ड में है। यहां जिला के कुल दलहनी रकबे के 30 प्रतिशत रकबे पर चना की खेती होती है। उड़द का उत्पादन क्षेत्रफल सबसे अधिक साजा में 47 प्रतिशत (114 हे.), एवं लाखड़ी–तिवरा का उत्पादन क्षेत्रफल सबसे अधिक नवागढ़ विकासखण्ड में 36 प्रतिशत (4,493 हे.) है।

तालिका क्रमांक 02 : बेमेतरा जिला में प्रमुख दलहनी फसलों का उत्पादन (मी. टन में) संदर्भ वर्ष 2018–19

क्र.	जिला / तहसील	प्रमुख दलहनी फसलें				
		चना	तुअर	उड़द	लाखड़ी / तिवरा	योग
1.	नवागढ़	84,399 (17)	4,877 (26)	344 (31)	8,569 (22)	98,189 (17)
2.	बेमेतरा	1,15,054 (23)	3,626 (20)	209 (19)	8,887 (23)	1,27,776 (23)
3.	साजा	1,07,523 (21)	2,479 (13)	152 (14)	8,006 (21)	1,18,160 (21)
4.	थान खम्हरिया	1,08,000 (21)	4,180 (23)	280 (26)	4,070 (11)	1,16,530 (20)
5.	बेरला	92,728 (18)	3,314 (18)	109 (10)	8,927 (23)	1,05,078 (19)
	योग	**5,07,704 (100)**	**18,476 (100)**	**1,094 (100)**	**38,459 (100)**	**5,65,733 (100)**

स्रोत : अधीक्षक, भू–अभिलेख बेमेतरा

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट है वर्ष 2018–19 में बेमेतरा जिला में कुल 5,65,733 मी. टन दलहन फसलों का उत्पादन हुआ जिसमें सबसे अधिक चने का 5,07,704 मी. टन उत्पादन है। जिला के कुल चना उत्पादन 5,07,704 मी. टन में सबसे अधिक 1,15,054 (23%) मी. टन बेमेतरा जिला में रिकार्ड किया गया। इसी तरह तुअर का सबसे अधिक उत्पादन 4,877 (26%) मी. टन एवं उड़द का सबसे अधिक उत्पादन 344 (31%) मी. टन नवागढ़ जिला में, एवं लाखड़ी–तिवरा का सबसे अधिक उत्पादन बेरला विकासखण्ड में 8,927 (23%) मी. टन रिकार्ड किया गया।

तालिका क्रमांक 03 : प्रमुख दलहनी फसलों का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन (क्विंटल में) सन्दर्भ वर्ष 2018–19

क्र.	जिला/तहसील	दालें				
		चना	तुअर	उड़द	लाखड़ी/तिवरा	औसत
1.	नवागढ़	858	1,226	650	711	861
2.	बेमेतरा	1,227	1,272	715	588	951
3.	साजा	1,188	698	568	540	749
4.	थान खम्हरिया	1,166	616	410	720	728
5.	बेरला	964	794	440	712	728
	औसत	**1,081**	**921**	**557**	**654**	**803**

स्रोत : अधीक्षक, भू–अभिलेख बेमेतरा

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 03 के अनुसार बेमेतरा जिला में 2018–19 में प्रमुख दलहनी फसलों का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 803 क्विंटल दर्ज किया गया। प्रति हेक्टेयर सर्वाधिक औसत उत्पादन 951 क्विंटल बेमेतरा विकासखण्ड में दर्ज किया गया। जिला में चने का सर्वाधिक औसत उत्पादन 1,227 क्विंटल बेमेतरा विकासखण्ड में रहा, जो चना के जिला में औसत उत्पादन 1,081 क्विंटल से 146 क्विंटल अधिक है। जिला में तुअर का सर्वाधिक औसत उत्पादन 1,272 क्विंटल बेमेतरा विकासखण्ड में रहा, जो तुअर के जिला में औसत उत्पादन 921 क्विंटल से 351 क्विंटल अधिक है। जिला में उड़द का सर्वाधिक औसत उत्पादन 715 क्विंटल बेमेतरा विकासखण्ड में रहा, जो उड़द के जिला में औसत उत्पादन 557 क्विंटल से 158 क्विंटल अधिक है। जिला में लाखड़ी–तिवरा का सर्वाधिक औसत उत्पादन 720 क्विंटल थान–खम्हरिया विकासखण्ड में रहा, जो लाखड़ी–तिवरा के जिला में औसत उत्पादन 654 क्विंटल से 66 क्विंटल अधिक है।

समस्याएं :

बेमेतरा जिला एक कृषि प्रधान जिला है, जहां खरीफ सीजन में प्रमुख रूप से धान एवं रबी सीजन में मुख्य रूप से दलहनी फसलों की खेती की जाती है। यहां के किसानों की आमदनी का प्रमुख साधन खेती–किसानी, कृषि है। पिछले कुछ सालों से कृषि कार्य में किसानों को अनेकों प्रकार की समस्याओं एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। कृषि कार्य में इस समय सबसे बड़ी समस्या जलवायु एवं मौसम की प्रतिकूलता का है। बेमौसम की वर्षा के कारण फसलें पूरी तरह खराब हो रही हैं, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। किसानों की दूसरी प्रमुख कठिनाई उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीजों का अभाव है। इन मंहगी, ऊंची कीमत की बीजों के लिए अधिक कीमत चुकाने के बावजूद किसानों को सही प्रामाणिक बीज नहीं मिलने से उत्पादकता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। बेमौसम बारिश के कारण अनेक प्रकार के रोगों (बीमारियों) का लगना और रासायनिक दवाईयों के कीमत में भारी वृद्धि किसानों के लिए एक बड़ी समस्या है। कई बार तो गरीब किसान फसल में लगे बीमारियों की रोकथाम ही नहीं कर पाते हैं। सिंचाई की उचित सुविधा का अभाव एक समस्या है। फसलों का उचित दाम नहीं मिलना एवं समय पर नहीं मिलना किसानों की समस्या बनी हुई है। सरकार के द्वारा इस संबंध में अनेक प्रकार की सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं की बात आती है, लेकिन धरातल पर समस्याएं एवं कठिनाईयां जस की तस बनी हुई हैं।

समाधान :

किसानों की इन समस्याओं का सरकार के द्वारा समय पर उचित समाधान आवश्यक है, जिससे किसानों की फसलों का नुकसान रोका जा सके, वहीं राज्य की कुल उत्पादन, उत्पादकता की स्थिति बरकरार रह सके। समय पर, सही कीमत पर, जरूरत के अनुसार एवं सही और प्रामाणिक बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक एवं दवाईयां इत्यादि किसानों को उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेदारी है, जिसमें कई बार सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की व्यापारियों के साथ मिलीभगत होने के कारण किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। सरकार के द्वारा इसका ठोस समाधान किए जाने की जरूरत है। साथ ही साथ बिचौलियों एवं आढ़तियों पर भी सरकार का नियंत्रण एक आवश्यक कदम है, जिससे किसानों को फसलों का उचित दाम मिल सके। यदि सरकार किसानों की इन समस्याओं का उचित एवं सही समय पर वाजिब समाधान कर देती है, तो निश्चित रूप से किसानों का भला होगा एवं राज्य में दलहन उत्पादन एवं उत्पादकता दोनों बढ़ेगी।

संभावनाएं एवं निष्कर्ष :

छत्तीसगढ़ के कृषि मानचित्र पर बेमेतरा जिला का दलहन उत्पादन एवं उत्पादकता के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान है। जिला की भौगोलिक स्थिति एवं धरातल की बनावट भी दलहनी एवं तिलहनी फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल परिस्थितियां एवं वातावरण निर्मित करता है। यही कारण है कि यह जिला राज्य में दलहन उत्पादन में अग्रणी जिला के रूप में अपना स्थान कायम रखने में सफल हो रहा है। जिला में दलहन उत्पादन की अपार संभावनाएं मौजूद हैं, जिनका विदोहन करके जिला में दलहन उत्पादन को भविष्य में और बढ़ाया जा सकता है, लेकिन पिछले कुछ सालों से प्रतिकूल जलवायु एवं मौसम, बीज एवं रासायनिक उर्वरक एवं दवाई कंपनियों की अंधाधुंध कीमत वृद्धि, श्रम लागतों में बेतहाशा बढ़ोतरी आदि समस्याओं के कारण दलहन की खेती किसानों के लिए बहुत बड़ी चुनौती बनती जा रही है। सरकार की तरफ से समय पर राहत, मुआवजा, अनुदान, सहयोग एवं सहायता नहीं मिलने से किसानों की कठिनाईयां कम होने का नाम नहीं ले रहीं है। ऐसे में दलहनी फसलों की खेती करना घाटे का सौदा साबित हो रहा है, और किसान मजबूरन धान की खेती करने की ओर सोचने को विवश दिख रहे हैं।

खान–पान में दहलनी फसलें प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत होती हैं। इसमें गेहूं, मक्का, जौ, धान एवं बाजरे जैसे अनाजों की तुलना में 2.3 गुणा अधिक प्रोटीन होता है। शाकाहारी भोजन में प्रोटीन की अधिकांश मात्रा दालों से ही मिलती है, इसलिए इसके उत्पादन को और अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए इसके समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी की तत्काल जरूरत है, वहीं सरकार की तरफ से कृषि कार्य में आ रही समस्याओं एवं कठिनाईयों के लिए ठोस एवं उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। विशेषकर छोटे, लघु, सीमांत दलहनी फसल उत्पादक किसानों के लिए विशेष सहायता, अनुदान राशि की घोषणा सरकार द्वारा की जानी चाहिए, जिससे जिले में दलहनी फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता को और अधिक बढ़ाया जा सके।

संदर्भ सूची :

1. *सिंह, सत्यप्रकाश : छत्तीसगढ़ एक परिचय, संशोधित परिष्कृत, 12 वां संस्करण, पृष्ठ 63।*
2. *त्रिपाठी, संजय एवं श्रीमती चंदन : छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ, उपकार प्रकाशन, आगरा–2, पृष्ठ 56।*
3. *कृषि दर्शिका, (2012) इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)।*
4. *दत्त एवं सुन्दरम के.पी.एम. (2012) भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली।*
5. *सिंह, अजय कुमार (2014), 'कुरूक्षेत्र' (मासिक पत्रिका) जून 2014, पृष्ठ 45 से 47।*
6. *मलिक, जगपाल सिंह (2015), 'कुरूक्षेत्र' (मासिक पत्रिका) सितम्बर 2015, पृष्ठ 7 अंक 11।*
7. *शिवे, वाई. एस. (2016), 'कुरूक्षेत्र' (मासिक पत्रिका) 2016, पृष्ठ 21 अंक 1।*
8. *भू–अभिलेख, बेमेतरा, वर्ष 2018।*

****